

॥ श्री वीतरागायनम् ॥

प्रश्नोत्तर रत्नमाला ।

ट्रैक्ट ७०५७

अनुवादक—

प० ब्रह्मदत्त शर्मा ।

प्रकाशक—

श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट-सोसायटी,
अम्बाला शहर ।

वीर सप्त २४४८
विक्रम सप्त १६७६
प्रथमवार १०००]

आत्म संघत् २७
ईस्वी सन् १९२२
[मूल्य ७॥

मुद्रक — मोहनलाल बँद,
स्वस्वतो प्रिन्टिंग प्रेस, बेलनगञ्ज-आगरा ।

वक्तव्य ।



चीन आचार्यों की लेख पद्धति अनास्तों थी, यह सरस, सूत्रितरूप में गाम्भीर्यार्थ से परिष्कृत होती थी, उसमें अधिकतर अपने पाण्डित्य को प्रकट करने के लिये शब्दजाल प्रयुक्त न किये जाते थे ।

आचार्यों के मनोगत भाव ये न थे कि वे अपने पाण्डित्य को प्रकट करने के लिये वे ग्रन्थ का निर्माण करना अपना कर्त्तव्य समझें, या उस द्वारा दिगन्तव्यापिनी कीर्त्ति ही लाभ करने की कोशिश में हों । नहीं २ महान्त उपकारिण — (महान् आत्मा उपकारी होते हैं)

यह जो ट्रैक्ट आप लोगों के करकमलों में है एक महान् त्यागी आत्मा द्वारा निर्मित हुआ है, निर्माता का नाम "विमल" था । यह नाम त्यागावस्था का है, पूर्वाश्रम (गृहस्थ) में इनका नाम था " राजा अमोघवर्ष " । जैसा कि सुस्तना-
-तर में प्रकटित निम्नलिखित पद्य से साक्ष्य होता है —

विवेकात्त्यक्त राज्येन राज्ञेयं रत्न मालिका ।
रचिताऽमोघवर्षेण सुधिया सदलकृतिः ॥

इस पद्य का अर्थ यह है कि-सत् असत् के ज्ञान होने के कारण समस्त राज्य को जलाब्जजि देनेवाले (त्यागी) युद्धिमान् राजा अमोघ वर्षेने यह 'रत्नमाला' पुस्तक बनाई, जो कि अलकारों से अलकृत है।

महानुभाव ! यहा हम यह न बताकर कि किस पद्य में कौन अक्षकार है, यही कहेंगे कि एक त्यागी के अनुभूत वचना को ग्रहण कर आत्मिक उन्नति करना सर्वसाधारण का कर्त्तव्य है।

इस पुस्तक का अनुवाद बहुत ही सरल भाषा में है, इसके अतिरिक्त भावार्थ लिखना तथा उसी अर्थ को विराद करने क लिये प्रथान्तरों के जो कि प्राय लोक प्रचलित मुधाच्य एव मनोहर हिन्दी पद्य तथा संस्कृत पद्य हैं उनका लिखना उपयुक्त समझ, प्रथ की शोभा बढ़ाने में प्रयत्न किया गया है, कठिन संस्कृत पदों के सरल अर्थ भी लिख दिये हैं, आशा है, कि पाठकगण इसे ध्यानपूर्वक पढ सानदित होंगे।

अनुवादक।

नमो वीतरागाय ।

प्रश्नोत्तर रत्नमाला ।

प्राणि पत्य वर्धमानं प्रश्नोत्तर रत्नमालिका वक्ष्ये ।
नागनरामरवन्धं देवं देवाधिप वीरम् ॥ १ ॥

अर्थ—भगवान् शेषनाग तथा मनुष्य और देवताओं से वन्दित देवाधिदेव वर्धमान* (महावीर स्वामी) को वन्दना कर “प्रश्नोत्तर रत्नमाला” नामक ग्रन्थ को बनाता हू ।

कःखलु नालक्रियते—दृष्टादृष्टार्थसाधन पटीयान् ।
कण्ठस्थितया विमल प्रश्नोत्तर रत्नमालिकया ॥२॥

प्रश्न—कौन पुरुष शोभित होता है ?

उत्तर—जो विमल मुनि निर्मित (बनाई हुई) “प्रश्नोत्तर रत्नमाला” पुस्तक को याद करके (दृष्ट) अनुभूत (अदृष्ट) अननुभूत अर्थ के सिद्ध करने में कुशल है ।

* श्री महावीर स्वामी के नामों में से “वर्धमान” भी एक उनका नाम है ।

भावार्थ—जो पुरुष देखे हुए या न देखे हुए पदार्थ का वास्तविकता (असलियत) को जानता है वही इस जगत में शोभित होता है, अर्थात् कितने ही पदार्थ ऐसे हैं जिनको मनुष्य नहीं जानता जैसे—“नरक क्या वस्तु है” ? इत्यादि विषयों के बतलाने ही के लिये यह पुस्तक है जिसमें मनुष्य भली भाँति गूढ़ विषयों से परिचित हो जाय इस ग्रन्थ के लिखन का यही मुख्य प्रयोजन है ।

भगवन् ! किमुपादेय गुरुवचन—

हेयमपिच किमकार्यम् ।

को गुरु रधिगततत्त्व सत्त्वहिता—

भ्युद्यत सततम् ॥ ३ ॥

शरण में आया हुआ शिष्य (भक्त) भगवान् (गुरु) से पूछता है—

प्र०—भगवन् ! क्या वस्तु उपादेय (ग्रहण करने योग्य) है ?

उ०—गुरु (देव) के वचन ।

— प्र०—किस का त्याग करना चाहिये ?

उ०—जो सेवनीय नहीं ।

३ प्र०—गुरु कौन है ?

उ०—जो कि तत्त्वज्ञ (युरे भले को पहिचान करने वाला) है और जो प्राणियों के हित करने ही में सदा तत्पर रहता है।

त्वरित किं कर्त्तव्य विदुषा ससार सन्ततिञ्चेद. ।
किंमोक्षतरोर्वाज सम्यग्ज्ञानक्रिया सहितम् ॥४॥

प्र०—विद्वानों को जल्दी से क्या काम करना चाहिये ?

उ०—ससार में आने जाने से छूटने का उपाय।

प्र०—मोक्षरूप वृत्त का र्वाज क्या है ?

उ०—क्रिया सहित "सम्यग्ज्ञान" हो जाना।

भावार्थ—विद्वाना का कर्त्तव्य है कि ससार चक्र से छूटने का उपाय करें। जिस मनुष्य के हृदय में क्रिया सहित सम्यग्-ज्ञान रूप र्वाज धोया गया है उस जान लो कि वह मोक्षरूप वृत्त क फलों को खाकर सुखी होगा।

वृत्तव्य—इस श्लोक में "क्रिया सहित सम्यग्-ज्ञान" होने से ही मोक्ष प्राप्ति होना बतलाया है कारण कि—बड़े ० वेदान्त के ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य वास्तविकता को तो जान लेते हैं किन्तु उस पर "अमल" नहीं करते, इसी का नाम है -

मनस्यन्यत् यचस्य यत् ।

अर्थात् मन में कुछ और, वाणी में कुछ और ।

कोई कथावाचक अपनी कथा में तो यह उपदेश देता है कि “अच्छेद्योऽय मदाहोऽयम्” यत् आत्मा न कट सकता न जल सकता है और अवसर प्राप्त होने पर सदा दूर । ऐसे पुरुषों को सम्यक्ज्ञानीतो कह सकते हैं किन्तु “क्रियानिष्ठ” नहीं । कहा भी है—

शास्त्राण्य धीत्यापि भवति मूर्खा ।

शास्त्रों को पढ़कर भी मूर्ख होते हैं अर्थात् यह नहीं कि शास्त्रज्ञ पुरुषों के लिये स्वर्ग का दरवाजा खुला है और मूर्खों के लिये बन्द । नहीं २ क्रिया के ऊपर निर्भर है, जो पुरुष “कर्त्तव्य परायण” होगा, वही मोक्ष सुख को प्राप्त करेगा । शास्त्र तो केवल पथ प्रदर्शक मात्र (रास्ते के घतलाने वाले) हैं । पाठक की इच्छा जो करे । कार्य करने में जीव स्वतन्त्र है और भोगने में परतन्त्र ।

किं पथ्यदन धर्म , क. शुचिरिह,

यस्य मानस शुद्धम् ।

क. पाण्डितो विवेकी, किं विपमव—

धीरिता गुरव ॥ ५ ॥

५ प्र०—रास्ते में क्या खाना चाहिये ?

उ०—घर्म ।

६ प्र०—शुद्ध कौन है ?

उ०—जिसका मन शुद्ध है ।

७ प्र०—पण्डित कौन है ?

उ०—जो (सत्) मला (असत्) चुरे को पहिचानता है ।

८ प्र०—विप क्या है ?

उ०—मूर्ख गुरु ।

वस्तुत्व—

पथ्यदनम्—पथि—मार्ग में । अदनम्—खाना ।

मार्ग में क्या खाना चाहिये ? यह प्रश्न जिज्ञामु को उठ लिये उठा है कि शास्त्रकार चलते हुए खाने का निषेध करते हैं ।

एक समय राजा भोज की सभा में कालिदास कवि ने आकर राजा को प्रणाम (धन्दना) की, राजा ने कहा उठे नन्दे ! यह सुन कालिदास ने यह पद्य पढा—

सादक्ष गच्छामि हसन्नं नन्दे—

गतक्ष शोचामि कृतक्ष नन्दे ।

द्राभ्या तृतीयो न भवामि राजन् ।
केनास्मि मूर्खो वद ! कारणेन ॥

अर्थ—मैं खाते हुए कभी नहीं चलता, अर्थात् चलते हुए खाता नहीं । बोलते समय हसता नहीं, व्यतीत घात को सोचता नहीं । किये हुए काम को मानता नहीं अर्थात् किसी काम का करके यह नहीं कहता कि यह काम मैंने किया या यों कहो कि 'मियाँ मिट्ठूँ नहीं बनता' । और जहाँ दो मनुष्य परस्पर बातचीत कर रहे हों मैं वहाँ नहीं जाता फिर बतलाओ मैं क्यों मूर्ख हूँ । बिना बुलाये किसी की गोष्ठी में दरज़ल देना यह भी मूर्खता का चिह्न है ।

अनाहूत प्रविशति ।

बिना बुलाए जा दरज़ल देता है, अर्थात् 'खामुरवाह' अस्तु ।

इस कथन से हम यही ग्रहण करना है कि शास्त्रों में चलते हुए माग में उपभोग (खाना) निषिद्ध है फिर भी क्या खाना चाहिये ? अर्थात् किसका उपभोग करना चाहिये । उत्तर है—धर्म का ।

माग में चलते हुए कितने ही जीवों के प्राण जाने की आशका है इसलिये—

“दृष्टि पूत न्यसेत्पादम्”

रास्ते में मनुष्य का नीचे देख भालकर चलना याहिसे
वे कीड़ी आदि जीवों की मौत न हो ।

* पण्डित वही है जो बियेकी है अर्थात् भूठ लच को
त है ।

यह नहीं कि रोटो पकाने वाला पण्डित, पानी भरने
। पण्डित, घोक्का उठाने वाला पण्डित ।

यह तो शब्दार्थ अब लक्षण सुनिये—

आत्मज्ञान समारम्भास्तितिक्षा धर्मनित्यता
यमर्था नाय कर्षन्ति सधै पण्डित उच्यते ।
निषेवते प्रशस्तानि, निन्दितानि न सेवते ।
गनास्तिक अदधान एतत्पाण्डित लक्षणम् ।

अर्थ—जो आत्मज्ञानी, उद्योगी, सहनशील तथा धार्मिक
और जिसको सासारिक रगडे ऋगडे अपनी तक न खींचते
वही पण्डित है ।

* पण्डित—सर्व असर्व विषयिनी बुद्धि, साऽस्वेति । यह शब्दार्थ
रा ।

जा श्रेष्ठाचरणा का सेवन पगता है निन्दिता परतों क
 नहीं, और जो नास्तिक नहीं अध्यात्मि में ईश्वर पर विश्वास
 है, जो परलोक को मानता है, जिसकी धर्म पर ईश्वर पर श्रद्धा
 है वही परिष्ठत है—

इत्यादि जिसमें गुण हो उसे परिष्ठत जानता ।

वास्तविक शुद्धता नाम है—मात्मिक शुद्धि का स्नातक
 जा है ये वही शुद्धि क अन्तर्गत है । जज्ञ से शारीरिक शुद्धि
 ही सक्ती है आत्मिक नहीं ।

ऋषे धोये क्या गया, मन में मैल समाय ।

मान सदा चल में रहे धोये वास न जाय ॥

आर्त्तिर्गात्राणि शुष्यन्ति मन सत्येन शुष्यति ।

विद्यातपश्चां भूनात्ता बुद्धिज्ञान शुष्यति ॥

अर्थ—जज्ञ ने शरीर, सत्य में भा, विद्या और तप
 से अन्तरात्मा तथा ज्ञान से पुद्धि शुद्ध हाता है ।

एतत्कथनानुसार यह मानना पड़ता है कि अन्तरात्मा क
 शुद्धि ही वास्तविक शुद्धि है और वह विद्या या तपो-उद्योग
 से होगी ।

आत्मानदी सयम पुण्यताय मत्स्योदक गांततटादयोर्मि ।

तपामिषक कुरुपाण्डुपुत्र नवारिणा सुष्यति पान्तरात्मा ॥

हे युधिष्ठिर ! आत्मा—एक नदी है, समय * ही पवित्र तीर्थ है । सत्य—जल है,—शील—किनारा है ? दया—लहर है । ऐसी नदी में तू स्नान कर, सिर्फ पानी में डुबकी लगाने से तेरा अन्तरात्मा शुद्ध नहीं हो सकता, यह है वास्तविक शुद्धि । जिस मनुष्यने मूर्ख मनुष्यों को गुरु बनालिया उसकी तो अवश्य मौत होगी क्योंकि मूर्ख गुरु विप के समान है और विप से मनुष्य की मृत्यु होती है । जो स्वयं अन्धा है वह किसी को क्या मार्ग दिखावेगा ? होगा यही कि—

† यादशी शीतला देवी तादशी वाहन सर ।

जैसी देवी शीतला ऐसे ही उसका वाहन गधा, जो दशा गुरु की होगी वही शिष्य की ।

जस गुरू हैं तस चेला

एक नाव में डेलम् डेला ।

किं ससारे सार बहुशोऽपि विचिन्त्य मान मिदमेव ।
मनुजैषु दृष्ट तत्त्व स्व परहिता यो द्यत जन्मा ॥ ६ ॥

* (धर्हिता) किसी को न सताना, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्म ब्यावस्था में रहना, (परिग्रह) स्नातन न करना । ये यम हैं ।

† शीतला—एक देवी है जो कि गधे की सवारी करती है ।

प्र०—ससार में सार (असलियत) क्या है ?

उ०—मनुष्यों में तत्त्वज्ञ होना, और आत्मोन्नति तथा परोपकार करना इन्हीं दो धर्मों बहुत मनुष्यों ने सिद्धान्त रूप (ठीक) बताया है।

परोपकरण कायात् असारात् सारमाहरेत् ।

इस असार शरीर से परोपकार रूप सार लेने चाहिये अथवा यह किस काम में आवेगा ? आल कल धरिकों के समान यह नहीं कहना चाहिये। यथा—

तुम मर रहे तो मरो तुमसे हमें क्या ? काम है ।
हम पर सकल सुख सम्पदा है नाम है, सुख धाम है ॥
तुम कौन हो ? जिनके लिये हमको यहा अवकाश हो ।
सुख भोगते हैं हम, हमें क्या जो किसी का नाश हो ॥

मदिरेव भोहजनक क स्नेहः—

केच दस्यवो विषयाः ।

का भववह्नी तृष्णा को वैरी,

नन्वतुद्योग ॥ ७ ॥

प्र०—शराव के समान कौन बेहोश करता है ?

उ०—स्नेह ।

प्र०—डाकू कौन हैं ?

उ०—*विषय ।

११ प्र०—ससार की बेल क्या है ?

उ०—वृष्णा ।

१२ प्र०—शत्रु कौन है ?

उ०—आलम्ब्य ।

कस्माद्भय मिहमरणादपि कोविशिष्यते रागी ।

क' शूरो यो ललना लोचन कटाक्षैर्नव्याथितः ॥८॥

१३ प्र०—ससार में भय किस से लगता है ।

उ०—मरने से ।

१४ प्र०—अन्ध से भी बड़ा अन्धा कौन है ?

उ०—रागी ।

१५ प्र०—बलवान कौन है ?

उ०—जो स्त्रियों के लोचन (आक्ष) रूप बाणों से घायल नहीं हुआ ।

पातु कर्णाञ्जलिभि किममृतमिव बुध्यते सदुपदेशः।

किं गुरुताया मूल यदेतद् प्रार्थनं नाम ॥ ९ ॥

* क/म, क्रोध, छोम, मोह, अभिमान, मत्सरवा ।

१६ प्र०—कान रूप अश्ली से अमृत के समाग क्या
पाना चाहिये ?

उ०—सदुपदेश ।

१७ प्र०—गुरुता का मूल क्या है ?

उ०—न माँगना ।

मनुष्य की गुरुता (बड़प्पा) का मूल न माँगना है ।

जावित ही ये मर चुके जो माँगन को बौद्धि ।

उनसे पहले ये मरे जिन मुस निकमत नाहि ॥

माँगन मरण समान है मति माँगो कोइ भीर ।

माँगन से मरना गला यह सत गुरु की सीस ॥

किं गहन स्त्री चरित कश्चतुरो योन खण्डित स्तेन
किं दारिद्र्य मसन्तोष एव किं लाघव याचना । १० ।

१८ प्र०—गहन (गुरि कल) क्या है ?

उ०—स्त्रियों का चरित्र जानना ।

१९ प्र०—होशियार कौन है ।

उ०—जोकि स्त्री के चरित्र से ठगा नहीं गया ।

२० प्र०—दारिद्र्यता क्या है ?

उ०—असन्तोष ।

नहिं धन धन है परमधन, तोषहिं कहैं प्रवीन ।
 विन सन्ताप कुबेर हू दारिद्र दीन भलीन ॥
 गोधन, गजधन, याजिधन और रतनधन स्नान ।
 जो आवे सन्ताप धन सब धन धरि—समान ॥

२१ प्र०—छुद्रता क्या है ?

उ०—मागना ।

वास्तव में स्त्रियों का चरित्र गहन है उसको देवता भी नहीं जान सकते ।

स्त्रियश्चरित्र देवो न जानाति कुतोमनुष्य ।

स्त्रियों के चरित्र को देवता भी नहीं जान सकते तो मनुष्य क्या जानेंगे ?

स्त्री-चरित्र—

अयं प्रियालाप पथ नयन्ते किञ्चित् कटाक्षपर स्पृशाति ।

अयहृदा कम्पन मन्त्रयते धिग्योपिता चञ्चल चित्त वृत्तिम् ॥

किसी ने प्यारी २ बातें कर्ची हैं, किसी को मन्द कटाक्ष में स्पर्श परती हैं, हृदय से किसी और को ही चाहती हैं । किसी से गुप्त वार्त्तालाप करती हैं ऐसी स्त्रिया के चरित्र को धिक्कार है ।

किं जीवित मनवद्य किं जात्य पाटवेऽप्यनभ्याम ।
नोजागृति त्रिनेकी कानिद्रा मृदता जन्तो ॥११॥

२२ प्र०—वास्तविक जीवन क्या है ?

उ०—आनिदित ।

प्र०—मृगिता क्या है ?

उ०—निपुण होन पर भी अभ्यास न करना ।

प्र०—जागता कौन है ?

उ०—परकी ।

१ प्र०—नींद क्या है ?

उ०—प्राणी की मूर्खता ।

नालिनीदल गद जल लव तग्ल

किं यौवन धन मयापु ।

के रागधर कर निकरानुकारिण —

सज्जनाम्ब ॥१२॥

प्र०—कमलिनी के पत्ते के ऊपर पड़े हुए जल के समान
चलन कौन है ?

उ०—युवावस्था, धन और आयु ।

२७ प्र०—चन्द्रमा की किरण समूह के समान धिमल कौन हैं ?

३०—मञ्जन ।

इस श्लोक का भाव यह है कि जैसे कमलिनी के पत्रों के ऊपर पड़ा हुआ पानी चञ्चल होता है अर्थात् क्षण में तो माती के समान मनोहर प्रतीत होता है और क्षण में ही जरा बायु चली कि जमीन पर गिरकर मिट्टी के रूप में प्रारण्य होगया, दूदा करो तौ भी नहीं मिलता ।

इसी तरह युवावस्था, दौलत और आयु क्षणनशुर हैं ।

दौलत पास न कीजिये, सपनेहु में अभिमान ।

चञ्चल चल दिन चारि को, टौर न रहत निदान ॥

और भी—

धन अर जोवा को गरव कबहू करिये नाहि ।

देखने ही मिट जात है, ज्यों बादर की छाहि ।

अतएव मनुष्य का धन और युवावस्था का कभी अभिमान न करना चाहिये ।

हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारेफानी में ।

कुछ अच्छा काम फरली चार दिन की जिन्दगानी म ॥

सञ्जनजन चन्द्रमा के समान होते हैं अर्थात् उनका
इन्द्रिय चन्द्रमा की स्वच्छ किरणों के समान शुद्ध होते हैं। उर्गी
सञ्जना से प्रथ्या "रत्नवती" कहाती है।

नाभ्यसद्भाषित यस्य नास्ति भगो रणागनात् ।

नास्तीति याचके नास्तितेन रत्नवतीश्रिति ॥

जो भूठ घालना नहीं जानते, लडाइ में पीठ नहीं दिखाने,
भिक्षारी को "नहीं है" ऐसा बचन नहीं कहव, व-हीं स पृथा
का "वसुधरा" कहा जाता है।

जिन मणुष्यों की जीवत चर्या उक्त प्रकार की होगी, व
ह। शुद्ध हृदय हैं और व-हीं को सञ्जन कहा जाता है।

मनस्यक ययस्येकं कमप्येक महात्मनाम् ।

मन, वाणी, दम में महात्माओं के विभिन्नता नहीं आता,
इमोलिये दाकी उपमा चन्द्र किरणों के समान ही है।

कोनरक परवशता किं सौर्य सर्वसग विरतिर्या ।
किं सत्यभूतहित किंप्रेय, प्राणिनामसव ॥ १३ ॥

२८ प्र०—नरक क्या है ?

उ०—पराधीनता।

२५ प्र०—सुख क्या है ?

उ०—सारे क्रमों से छूटना।

३ प्र०—सत्य क्या है ?

उ०—प्राणियों पर दया ।

३१ प्र०—प्राणियों को क्या प्रिय है ?

उ०—प्राण—

वक्तव्य- नरक नाम है, दुःख का शब्द निरुत्तिकारा ने कहा है ।

नरक चरक नीचैर्ग मनामिति ।

दुर्गति को प्राप्ति होना ही नरक है, वह नरक पराधीनता में मिलता है इमलिये पराधीनता के समान कोई दुःख नहीं वह सिद्ध हुआ ।

सर्वं परवत्त दुःख सर्वमात्मवत्त सुखम् ।

एतेत् विधात्तमासेन लक्षण सुख दुख यो. ॥

पराधीनता में प्राप्त हुआ सुख भी दुःख ही है, और जो पराधीनता है वही सुख है ।

इसी भाव को तुलसीदास शब्दान्तर में वर्णन करते हैं —

पराधीन सपनेहु सुख नाही ।

कर विचार देखहु मन माहीं ॥

और भी—

पराधानता दुख मही, सुख जग में स्वार्थीन ।
सुखी रहत शुक्र वा विपे, कनक पीपरे दीन ॥

एक कवि की भावना—

चाहें दुखों को हम सहें सुख दूर ही होते रहें ।
नीतिज्ञ निंदा ही करें चाहें भला हमका कर ॥
धा राशि आवे या जुदा हो किन्तु पत्राये नहीं ।
स्वार्थीनता को बंध अरि* की जूतियां साधे नहीं ॥

मिले सुम्क रोटी जो आजाद हो कर ।

गुलामी की पूड़ी व हट्टा से बेहतर ॥

कि दान मनाकाक्ष कि मित्र यान्निवर्तपापात ।

कोऽलकार शील किं वाचा मण्डन सत्यमा॥१४॥

१२ प्र०—दान कौनसा है ?

उ०—जो अनाकाक्ष (नि स्वार्थ) हो ।

१३ प्र०—मित्र कौन है ?

उ०—जो पाप से हटावे ।

३४ प्र०—गहना क्या है ?

उ०—शील ।

३५ प्र०—गणी का भूपण क्या है ?

उ०—सत्य ।

भान—जिस दान में स्वार्थ भाव है, शास्त्रकारों ने उसे निर्धक बतलाया है, दान उसी का नाम है जो निमम स्त्री मात्र स्वार्थ न हो । मित्र वही है जो पापात्मा बनने से हटावे ।

मित्र के लक्षण—

पापान्निवारयति, योजयते हिताय,

गुह्यन्व गूहति गुणान् प्रकटा करोति ।

आपद्गतन्वनजहाति ददातिकाले,

सन्मित्रलक्षणमिदं प्रदन्तिसत ।

अर्थ—पाप काया से हटावे, हितयुक्त कार्य में लगावे, छिपान लायक बात को छिपावे, गुणा को प्रकट करे, आपत्ति में माथ न छाड़े, समय पर रुपया पैसा आदि स सहायता करे वही सच्चा मित्र है ।

हृगति कुल कलय तूम्पते पाप पङ्क ।

सुदृढमुषधिनाति श्लाघ्यनामातनोति ॥

नमयति सुरपगं हन्ति दुर्गोपसः ।

रचयति शुचि शील स्वर्गमोक्षौ सर्वात्म॥

(कवि पद्यानन्द)

सोन चादी के भूषण नकली भूषण हैं, अमली भूषण शील है ।

शील से मनुष्य कुलगत फलक को दूर करता है, पाप को नारा करता है, पुण्य की वृद्धि करता है, वित्र बाधाओं से रहित हो लोगों में प्रशिक्षित होता है एवं स्वर्ग और मोक्ष का प्राप्त करता है ।

वार्णा का भूषण है सत्य, राजा भक्तदरि कहते हैं —

कैयूरा विभूषयन्ति पुरुष हारा चन्द्रोचला ।

मस्तान न विलेपन न वुसुभ नात्थनामूषया ॥

वाण्येका समलकरोति पुरय या मस्तृता धायत ।

क्षीयन्त सत्तुभूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम् ॥

कुण्डल पहिना, चन्द्रमा के समान उज्वल (सफेद) हार, स्नान, चन्दन, फूल तथा मुकुट पहिनकर मनुष्य को वह शोभा नहीं होती जो कि मत्स्यवाग् पुरुष की होती है । क्योंकि उपर्युक्त गहने तो नष्ट हो जाते हैं और सत्यरूप गहरा चरणभगुर नहीं ।

किमनर्धफल मान समसगत कासुखावहा मैत्री ।
मर्व व्यसन विनाशे कोदक्ष सर्वथा त्याग ॥ १५ ॥

१६ प्र०—बुरे कामों का फल क्या है ?

उ०—मन की मलिनता ।

१७ प्र०—सुर देने वाली क्या चीज है ?

उ०—मित्रता ।

१८ प्र०—समस्त व्यसनों के नाश करो में चतुर कौन है ?

उ०—जिसने सब कुछ त्याग लिया ।

कोऽन्धोयोऽकार्यरत को वधिरो य श्रृयोतिनाहितानि ।
क्रे मृकोय काले प्रियाणि वक्रु न जानाति ॥ १६ ॥

१९ प्र०—अन्धा कौन है ?

उ०—जो अवोग्य काम करता है ।

२० प्र०—वधिर (वैरा) कौन है ?

उ०—जो आत्महित के वाक्य नहीं सुनता ।

२१ प्र०—गूगा कौन है ?

उ०—जो समय पर प्रिय वचन नहीं बोल सकता ।

* किंमरणं मूर्खत्वं किंचानर्घ्यं यदवसरे दत्तम् ।
आमरणात् किं गत्य प्रच्यन्न यत्कृतमकार्यम् ॥१७॥

४- प्र०—मरता क्या है ?

उ०—मूरता ।

५) प्र०—अमूल्य वस्तु क्या है ?

उ०—भो समय पर दी गई हो ।

६- प्र०—मरण पर्यन्त शय (काली) क्या है ?

उ०—जो बुरा काम छिपा हुआ है ।

किसी मनुष्य ने अगर कोई बुरा काम कर लिया तो उसे वह सदा रगटकता रहता है । जैसे किसी मनुष्य की छाती पर अगर कीली ठोसदा जाय तो वह सदा घबराता रहता है, उसे ही जो मनुष्य दुष्कृत्य कर लेता है और प्रकट नहीं होते रहता वह सदा घबराता ही रहता है ।

कुत्र विधेयो यत्नो त्रिधाभ्यासे सदौषधे दाने ।
श्रवधीरिणा क्व कार्या खल परयोपित्तरधनेषु ॥१८॥

१- प्र०—परिश्रम कक्षा करना चाहिये ?

उ०—विद्या पढ़ने, औषधि और दानम ।

४६ प्र०—उपेक्षा बुद्धि कहा रखनी चाहिये ?

उ०—दृष्ट, पराई स्त्री और पराये धन में ।

अहर्निश मनुचिन्त्या संसारा सारतानच प्रमदा ।
काप्रेयसी विधेया करुणा दाक्षिण्यमपि मैत्री ॥१६॥

४७ प्र०—दिन रात क्या विचारते रहना चाहिये ?

उ०—ससार की अमारता, स्त्री को तहा ।

४८ प्र०—अति प्यारी किसको बनाना चाहिये ?

उ०—कृपा, चतुरता और मिता को ।

कण्ठगतैरप्यसुभि कस्यात्मानो सन्नर्प्यते जातु ।
मूर्खस्य विपादस्य च गर्भस्य तथा कृतघ्नस्य ॥२०॥

४९ प्र०—प्राणों के कण्ठ तक आने पर भी किसका आत्मा नहीं दिया जाता, अर्थात् “मौत” के मुख तर पहुचने पर भी कौन पुरुष अपन आत्मा को समर्पित नहीं करते ?

उ०—मूर्ख, दुष्टात्मा, अभिमानी और कृतघ्न ।

साराश यह है कि उपर्युक्त चार प्रकार के पुरुष मृत्यु पर्यन्त महात्माओं के वचन का आश्रय नहीं लेते ।

मूर्ख के विषय में भर्तृहरि राजा कहते हैं —

प्रसह्यमणि मुहुरे मकर वक्र दष्ट्राकुरात्—

समुद्रमपि सन्तरेत्प्रचलद्दूर्ध्वमात्मा कुलम् ।

कदाचिदपि पर्यटञ्छप विषाणमासादये—

नतुप्रीतनिविष्ट मूर्खजनचित्त माराधयेत् ।

अर्थ—बड़ा जोर मार कर मगर के मुँह की दाढ़ों में से मणि निकाल ले ।

जिस समुद्र में चञ्चल लहरें लहरा रहीं हैं ऐसे समुद्र को भी शामद मनुष्य तैर जाय, और शामद कभी घूमते फिरते गश (ससा) के भी सींग मिल जाय किन्तु मूर्ख जन का चित्त कभी नहीं सुखें सकता ।

तुलसीदास भी कहते हैं —

नाच निचाइ नहि तजै ज्यो पाषहि सत्सग ।

तुलसी च दन विटप यति विष ना तजत मुनग ॥

एसे ही अन्य तरह के पुरुषों की अधरमा जाननी ।

ॐ पूज्य सहृत्त कमधनमा चक्षेत चालित वृत्तम् ।

केनजित जगदेतत्सत्य तितिक्षा वतापुसा ॥२१॥

५१ प्र०—कौन पूजनीय है ?

३०—अच्छे चालचलन वाला पुरुष ।

प्र०—निर्धन किसे कहते हैं ?

उ०—पञ्चल (खराब) चालचलन वाले को ।

प्र०—इस दुनिया को किमने जीता ?

उ०—सत्यवागी या सहनशील पुरुष न ।

जिम पुरुष का चालचलन अच्छा है अर्थात् धार्मिक है वही (पुरुष) महापारी है, चाहे वह कोई भी व्यक्ति हो । महापारों ही ईश्वर का सच्चा भक्त है ।

आधार प्रथमो धम ।

महापार ही महान् धर्म दे । जो बुरापारी, अगर वह पानी भी है तो घुरी मगति धरा हस्तगत द्रव्य को बर्बाद कर देगा ।

सत्य और सहनशीलता अगोप अस हैं, इन्हीं से यह जगत् भी स्थिर है ।

सत्येन धार्यते पृथ्वा, सत्येन रवि चन्द्रमा ।

सत्य से जमीन, सूर्य, चाँद स्थित हैं ।

धनासङ्ग करे वन्द्य दुर्बला कि करिष्यति ।

जिम पुरुष के हाथ (पास) में धना रूप सङ्ग्रह है वनका गैलाग क्या करेगा ?

कस्मै नम सुरैरपि सुतरा क्रियते दया प्रधानाय ।
कस्माद्बुद्धिजितव्य ससारारण्यत सुधिया ॥२२॥

५३ प्र०—देवता भी किसकी धन्दा करते हैं ?

उ०—दयालु की ।

५४ प्र०—विद्वान् को किमम डरना चाहिये ?

उ०—ससार रूप जगल से ।

जैसे जगल से मनुष्य को डर लगता है, क्योंकि उसमें शेर प्रादि भयानक जीवा का घाम है, ऐसी ही विद्वान् का ससार रूप जगल में डरना चाहिये, इस जगल में भी काम प्राणादि जीव वास करते हैं ।

कन्यवशे प्राणिगण सत्यप्रिय भाषिणो विनीतस्य ।
कस्थातव्य न्यायेपार्थ दृष्टादृष्टार्थे लाभाय ॥ २३ ॥

५५ प्र०—सासारिक जीव किसके अधीन हैं ?

उ०—सत्यवादी, प्रियवादी और विनीत (सभ्य या शिक्षित) के ।

तुलसा मीठ बधा ते मुन्व उपजत बहु आर ।
नर्तकीकरण एक मन्त्र है तब द्वे बचन कटार ॥

५६ प्र०—न जाने हुए और जाने हुए को प्राप्त करने के लिये कहा ठहरना चाहिये ?

उ०—उचित मार्ग पर ।

भाषार्थ—मनुष्य को सत्य मार्ग का ही अनुभव करना चाहिये ।

कदाचित् कोई पुरुष कहने लगे कि “हम समार में आय, हमने नहीं जाना कि मास में क्या खाद हाता है ? इसका भी अनुभव करें” यह बात अनुचित है, इस विचार का सर्वथा त्याग करना उचित है, हों यह अपरशय है कि अगर किसी ने कोई शास्त्र नहीं देखा तो उसका अध्ययन करने इनी की आज्ञा शास्त्रकार देते हैं “न्याय्ये यथीति”

विद्युद्विलसित चपल कि दुर्जन सगत युवतयश्च ।
कुलशैलनिष्प्रम्पा के कलिकालेऽपिसत्पुरुषा ॥२९॥

५७ प्र०—विजली के समान चञ्चल क्या है ?

उ०—छात्र मनुष्या की सगति और स्त्रियों ।

५८ प्र०—कुल पर्यतों † के समान अचल कौन है ?

उ०—मज्जन पुरुष, जो कि कलियुग में भी ‘सत्य धर्म परायण’ हैं ।

† गेरु, सुमरु, कैलाश आदि बड़े २ पर्वतों को कुल परत कहते हैं ।

किं शौच्य कार्पण्य सति त्रिभवे किं प्रशस्य मौदार्यम्
तनुतर त्रित्तस्य तथा प्रभविर्योर्यत्सहिष्णुत्वम् ॥२॥

५६ प्र०—शोचनीय क्या है ?

उ०—कृपणता ।

६ प्र०—प्रशसनीय क्या है ?

उ०—उदारता ।

२१ प्र०—बलवान और धनी कन प्रशसनीय हैं ?

उ०—जब कि उनमें महनशालता हो ।

प्रश्न १ का भावाधे—

जो वस्तु शोचनीय (सोचने लायक) होता है, वही दुःख
दायक है । इसलिये कृपणता (कञ्जूसी) सोचने लायक है
अतः इसका त्याग करना उचित है और प्रशमनीय उदारता
का ग्रहण ।

कबीर की मनोहर अक्ति —

साम पकाय लुटाय दे करले अपना काम ।
चलती विरिया रनरा सग न चले छदाम ॥
सौ पापन का मूल है एक रुपइया रोक ।
साधु होय सम्ह करै मिटै न समय सोक ॥

इस शक्ति पर कज्जुम ध्यान दे

चेन्तामाणिरिवदुर्लभमिह किंकथयामिननु चतुर्भद्रम्।
 नतद्वदन्ति भूयो विधूत तममो विशेषेण ॥ २६ ॥

६१ प्र०—चिन्तामाणि के समान दुर्लभ क्या है ?

उ०—चतुर्भद्र (दान, ज्ञान, अभिमान त्याग और सहनशीलता) जिसका अर्थ मैं (कवि विमल) आगे करूंगा ।

२) प्र०—ज्ञानात्तन उनके विषय में क्या आशा देते हैं ?

उ०—चार = विशयता से इस (चतुर्भद्र) को उपयोग में लाता ।

दान प्रिय वाक्साहित ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितमूर्गौर्यम्।
 त्याग सहितश्रयवित्त दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ॥ २७ ॥

अर्थ—मधुर वाक्य बोलत हुए दान देना 'निराभिमान हो जाना होना, परिश्रमी होते हुए भी सहनशील होना' । धन रहत हुए भी उमम ममस्व न करना । दुनिया में ये चार बातें दुर्लभ हैं ।

शाम के विषय में—

घन दीये धा गा घटे गरी न घटे नीर ।

अपनी आंखों देसला यो कवि गण करीर ॥

लेकिन दात देने समय माली आदि कुवाक्यों का प्रयोग न करना चाहिये । इसी तरह शांती होते हुए भी अभिमान न करना अर्थात् मैं विद्वान हूँ जिसे सश्रुत में “पण्डित मान्य” कहते हैं ऐसा वाक्य अपन मुँह से निकालना या मनमें भी कभी ऐसे भाषा का समायेरा न होना चाहिये ।

अगर मनुष्य बलवान है और फिर भी सहनशील है वही मनुष्य वास्तविक बलवान है ।

एक असाधारण उपदेश—

टुल का ग सताइय जाकी ऊर्चा हाय ।

गुड़ बेल की चाम तैं सार भगम है जाय ॥

गरीब का मत मताया गरीब रो दगा ।

अगर भगवान मुत्त गा ना गाने गां मे सादेगा ॥

कोटिवो वीततमा, क. सुगुरुः शुद्धमार्गं मंभाषी ।
किं परम विज्ञानं स्वकीयं गुणदोष विज्ञानम् ॥२८॥

६६ प्र०—देव कौन है ?

उ०—वीततमा ।

६७ प्र०—गुरु कौन है ?

उ०—शुद्धा रागता बताने वाला ।

६८ प्र०—महान ज्ञान क्या है ?

उ०—अवगुण और गुणा की पहिचान ।

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिकायेषाम् ।
ते मुक्ताभरणा अपि विभान्ति विद्वत्समाजेषु ॥२९॥

अर्थ—जिन मनुष्यों को यह 'प्रश्नोत्तर रत्नमाला' कण्ठ
(यात्र) है । वे जिन भूषण पहिन ता विद्वानों की सभा में
शासित होते हैं ।

रचिता मितपट गुरुणा विमलाविमलेन रत्नमालते ।
प्रश्नोत्तर रत्नमालेय कण्ठगता नन्न भ्रमयति ॥३०॥

अर्थ—सितपट नामक आचार्य के शिष्य विमल मुनि* की बनाई हुई "प्रश्नोत्तर रत्नमाला" को याद कर कौन पुरुष शाभित उहाँ दासा ? अर्थान् मय होते हैं ।



* विमल मुनि का नाम धायक दशम में 'राजा अमावस्य' था ।

